Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	*Research Paper*	*Paper No. VBRP-18*

व्यवहारिक नैतिकता की चुनौतियां एवं भारतीय सनातन परंपराएं एक समाधान के रूप में

डॉ.शोभा मिश्र, *प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, दर्शनिशास्त्र विभाग, शासकीय माधव महाविद्यालय, उज्जैन*

मूल्याधारित शिक्षा Value based Education आज के समय की सबसे बड़ी मांग है । वैश्विक परिदृश्य में व्यावहारिक नैतिकता अत्यंत आवश्यक तत्व है क्योंकि नई सहस्राब्दी इसके लिए तैयार हो रही है। सैद्धांतिक रूप से हर धर्म में अनेकों विवेचनाओं एवं विश्लेषणों के साथ हम हर देश के धर्म को विस्तार से जान सकते हैं परंतु के इस युग global civilization मेंजब हम धर्म एवं देश के लोग मिलकर एक नई संस्कृति का सृजन कर रहे हैं तब व्यावहारिक नैतिकता एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उभर कर सामने आती है क्योंकि इसका सीधा संबंध सदाचार एवं सद् व्यव्हार से है । किसी भी धर्म में इन दो तत्वों को कभी भी उपेक्षित नहीं किया गया है। ऐसी दार्शनिक परंपराएं जिनमें ईश्वर को भी नहीं माना गया है फिर भी सदाचरण एवं सद् व्यव्हार को महत्व दिया गया है । हमारा good conduct सद् good behaviour सदाचरण एवं हमारा वहार सदा ही मनुष्य को एक आदर्श के रूप व्य में प्रस्तुत होने का अवसर प्रदान करते हैं।

इसी संदर्भ में विभिन्न देश की नियमावलियों में संहिताओं एवं धर्म ग्रंथो में उल्लेखित नैतिकता को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। हमारे स्वयं के संविधान में भी 'मैं' की नहीं 'हम' की बात है। जिसका प्रारंभ ही हम भारत देश के लोग से होता है तत्पश्चात एक दूसरे के अस्तित्व, सम्मान, संस्कृति, धर्म एवं विचारों के प्रति आदर जिससे सौहार्द एवं समन्वय का जन्म हो एवं देश का वातावरण सदैव सामंजस्यपूर्ण हो ऐसा प्रयास हर नागरिक का कर्तव्य होना चाहिए ऐसी भावना हमारे संविधान में कूट-कूट कर भरी है । हर पंक्ति से यही लक्ष्य सिद्ध होता है कि मनुष्य जीवन बहुत मूल्यवान है इसे मूल्यवान बनाए रखना हमारी मजबूरी नही वरन अपरिहार्य आवश्यकता है।

इसी सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा का स्मरण करते हुए हम उन सनातन परंपराओं को समझने का प्रयास करेंगे जो हमे आज भी वर्तमान समस्याओ मे समाहित के रूप में हमें मार्गदर्शित कर रही हैं ।
कुछ उदाहरण प्रस्तुत है -

वेदाभ्यासस्तषो ज्ञानम शौच मिंद्रीयनिगह:।
धर्म क्रियात्मचिंता च सात्वि सात्विक गुण
लक्षणम ।।३।

इन सबको मद्दे नजर रखते हुए यह आवश्यक है कि हम व्यावहारिक नैतिकता की चुनौतियों को समझें । उन निर्णयों का विश्लेषण कर सके जिस कारण मनुष्य के व्यवहारों में तरह-तरह के परिवर्तन आते हैं। आज की भौतिक संस्कृति में यह समयानुकूल प्रतीत होता है कि हम सावधानीपूर्वक विष्लेषण करे

मैं सोचती हूं कि अब मुझे लगभग 5000 वर्षों से माने जाते रहे धर्म की परिभाषा आदि को आधुनिक परिपेक्ष में देखने का प्रयास करना चाहिए। मनु:स्मृति में भी हमेशा धर्म को नैतिकता एवं विवेक से जोड़ा गया है। और हमारे नव्य वेदांती दर्शनीको ने भी यही कार्य किया । इस संदर्भ में वर्तमान युग के हिंदू नवजागरण के पुरोधा जैसे राजा राममोहन

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

राय, देवेंद्र नाथ ठाकुर, भगवान दास, रविंद्र नाथ टैगोर, केशव चंद्र सेन, **श्री** रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद तथा **स्वामी** दयानंद सरस्वती के धर्म संबंधी विचारों को जानना भी संदर्भानुकूल लगता है । मैं उक्त विभूतियो में से कुछ के धर्म संबंधी विचारों का **उल्लेख** करना चाहती हूं। जिनमे आज भी हमारी सनातन परंपराएं धवनित होती है।

श्री रामकृष्ण ने केवल सभी धर्मों की तात्विक एकता का संदेश ही नहीं वरन उसका अपने जीवन में अनुसरण भी किया है। **उन्होंने** इस्लाम की दीक्षा ली और फिर ईसाई धर्म की भी दीक्षा ली। इन दीक्षाओं को लेने के **पश्चात** उन्होंने पाया कि सभी धर्म का लक्ष्य एक ही है। आपने किसी भी धर्म में अपनाए जाने वाले कट्टरतावाद की अवहेलना की, यही कारण था कि अनेक समकालीन सामाजिक चिंतकों ने धार्मिक एकता की शिक्षा दी ।

इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद ने घोषणा की "मैं सनातन धर्म का संदेश लेकर आया हूं जो सभी धर्मों को सत्य समझता है और जिसकी छत्रछाया में सभी धर्मों को पनपने का अवसर मिलता है ।' इनका भी विचार यही था कि सभी धर्म एक ही परम लक्ष्य की और बढ़ते हैं और सभी धर्म इस एक लक्ष्य को प्राप्त करते हैं । उन्होंने कहा कि धर्म का उद्देश्य यह नहीं कि वह हिंदू ईसाई बने या इसाई हिंदू या बौद्ध बने। हमारा उद्देश्य है कि सभी धर्मों को जानकर प्रत्येक धर्म व अन्य धर्मों की **सर्वग्राह्य** बातों को अपने अंतर में समाहित कर ले।

क्योंकि जिस प्रकार जगत की **सैद्धांतिक** समझ के लिए भौतिक अनुशासन होता है, उसी प्रकार सत्य के प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए नैतिक और आध्यात्मिक अनुशासन होता है। इसे हमें सदैव याद रखना ही होगा।

उपरोक्त दार्शनिकों के विचारों को समझने के पश्चात हम उन सनातन परंपराओं को समझने का प्रयास करें न कि किसी प्रकार जो आज भी वर्तमान समस्याओ मे समाधान के रूप में हमें मार्गदर्शित कर रही हैं ।

कुछ उदाहरण प्रस्तुत है -

वेदाभ्यासस्तषो ज्ञानम शौच **मिंद्रीयनिगह**:।
धर्म क्रियात्मचिंता च सात्वि **सात्विक** गुण
लक्षणम ।।३।

पृष्ठ -638 प्रजाप्त)**द्वादशो वेदों का अभ्यास** / इत्यादि ,मिट्टी)**शास्त्रों के अर्थ का ध्याय ज्ञान** (दान ,इंद्रियसंयम ,शुद्धि (**जल आदि के द्वारा** का (परमात्मा)**आदि धर्मकार्य और आत्मा** ३१हैं। (कार्य)**ये सब सत्वगुण के लक्षण** ,चिंतन धर्मात्मा एवं रागद्वेष से रहित विद्वानों द्वारा सर्वदासेवित और हृदय से **अच्छी** तरह जाना गया जो धर्म है उसको सुनो ।।
अर्थातो धर्म व्याख्या स्याम। **श्रुति प्रणाम को** : **धर्म श्रुतिशच विविधा वेदिकी तांत्रिकी च**
-पृ -भविष्यपुराण च 35
कर्म फल की इच्छा करना **श्रेष्ठ** नहीं है किंतु इच्छा का भाव भी नहीं है। **क्योंकि** वेद का ज्ञान और वेदांत कर्म करना भी इच्छा से ही होता है। **शुद्धता पर जोर देते थे। शिशु के समान सरल वात्सल्य के साथ भगवान को मां के नाम से पुकारने की भावना केशव ने रामकृष्ण से ही ली** थी।२

स्वामी दयानंद सरस्वती मूर्ति पूजा, अनेकेश्वरवाद तथा जन्मना वर्ण भेद के विरोधी थे। वह वर्ण को कर्मणा मानते थे। वे विधवा विवाह के पोषक तथा बाल विवाह के विरोधी थे।३ उनके धर्म संबंधी विचारों को जानने के लिए उनके द्वारा लिखित **सत्यार्थ** प्रकाश को पढ़ना आवश्यक है । स्वामी दयानंद ने जैन तथा बौद्धों के बुद्धिवाद को अपनाया । उन्होंने धर्म के साथ-साथ विज्ञान तथा तकनीकी को भी अपनाने की बात कही। इस प्रकार राजा राममोहन राय इत्यादि का **उल्लेख** किया जा सकता है । जिन्होंने आधुनिक समय की व्यवहारिक नैतिकता को समझा था और उनका समाधान ढूंढा।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

विडम्बना यह है कि आज भी **सुकर्म** तथा कुकर्म अथवा धर्म तथा अधर्म के बीच में अंतर को या तो समझा ही नहीं जाता या न समझने का नाटक किया जाता है । हम आजकल भी कई ऐसी घटनाओं को जानते, सुनते हैं जिनमें कोई डाकू आथवा कातिल अपने कार्यों को अंजाम देने से पहले देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बड़ी से बड़ी भेंट चढ़ाते हैं । पर यहां पर यह विचारणीय है कि उनका यह कार्य क्या धर्म श्रेणी में आता भी है। **निम्नलिखित** धर्म के दसों लक्षणों का किसी भी **कर्म** को धर्म कहलाने में घटित होना **आवश्यक** है। अति संक्षेप में, विषयानुकूल होने के कारण में सनातन धर्म के उन दसों लक्षणों का उल्लेख कर रही हूं जो आज भी उतने ही **प्रासंगिक** है जितने पुरातन काल में -

1. धृति - सामान्यतः धृति **शब्द** धैर्य तथा स्थिरता के लिए प्रयुक्त होता है । धैर्य को गीता में सत्, रज तथा तम तीन प्रकार का बताया गया है ।
2. क्षमा - इसका अर्थ उदार **प्रवृत्ति** से है । बलिष्ठ होते हुए निर्बल को **क्षमा** करना इसका लक्षण है।
3. दम - बाह्य इंद्रियों का संयमितअथवा वश में करना ही दमकहलाता है।
4. अस्तेय - इसका शाब्दिक **अर्थ** चोरी न करने से है।
5. शौच - इसका शाब्दिक **अर्थ** 'शुद्धि' है । स्थूल शरीर तथा सूक्ष्म शरीर दोनों की शुद्धि के लिए यह शब्द प्रयुक्त होता है।
6. इंद्रिय निग्रह- इंद्रियों को उनके विषयों से आवश्यकतानुसार संयमित करने से है ।
7. धी: - 'धी'का अर्थ बुद्धि से है।
8. विद्या - विनयदात्री **जिसकेअंतर्गत** ज्ञान और विज्ञान दोनों आ जाते **हैं** ।
9. सत्य - मनसा, वाचा तथा **कर्मणा** वाणी की यथार्थता ही सत्य है।
10. अक्रोध- विपरीत **परिस्थितियों** में भी मन तथा बुद्धि की शांति ही अक्रोध कहलाता है।

वर्तमान भयावह परिस्थितियों के समाधान के रूप में धर्म के इन दस लक्षणों को हमें समझना ही होगा जो कालांतर में किसी न किसी रूप में हर धर्म में उद्घाटित हुए हैं एवं सम्मिलित हैं। वे है सत्य, श्रुति, धी:, शौच, **अस्तेय**, क्षमा, दम, इंद्रिय निग्रह, विद्या एवं **अक्रोध**। व्यवहारिक नैतिकता को समझने के लिए इन प्रत्ययो को समझना इसके लिए आवश्यक है क्योंकि हर व्यक्ति निजी तौर पर या सामुदायिक तौर पर किसी न किसी नैतिकता के आधार को स्वीकार करता ही है । इसी प्रकार हम कितने भी व्यावसायिक हो जाएं परंतु हमारे नीति शास्त्रों में वर्णित पुरुषार्थ चतुष्टय: के **महत्व** को नजर अंदाज नहीं कर सकते ।

भारतीय संस्कृति में श्रीराम **धिरोदात्त** नायक के रूप में कथनी एवं करनी की एक रूपयता जीवन भर दिग्दर्शित करते हैं। पंचवटी में एक बार लक्ष्मण ने प्रभु श्री राम से ज्ञान, वैराग्य, माया, भक्ति, ईश्वर एवं जीवन का भेद जानना चाहा जिससे सभी भ्रम दूर हो सके। तब प्रभु ने समझाते हुए कहा कि -

"हे तात ! उसी को परम **वैराग्यवान** कहना चाहिए जो सारी सिद्धियां और तीन गुणों को तिनके के समान त्याग दे ।"

"धर्म से वैराग्य और योग से **ज्ञान** होता है तथा ज्ञान मोक्ष को देने वाला है ऐसा वेदों ने वर्णन किया है।"पृष्ठ 45- में राम बोल रहा हूं।
यह सत्य ही है की भक्ति ज्ञान एवं कम हमारे जीवन के आधार हैं बिना **ज्ञान** एवं कर्म के भक्ति व्यर्थ ही होती है हमारा **स्वयं** अनुभव कर सकते हैं कि भारतीय ही नहीं वरन् वैश्विक समाज हेतु यह सनातन परंपरा आज भी प्रासंगिक है जितनी कल भी उतनी ही आज वाले कल में भी रहेगी (भक्ति **ज्ञान** एवं कर्म)

सनातन धर्म की ये परंपराएं हर व्यक्ति के लिए हितकर है, क्योंकि अंततोगत्वा सभी धर्म एवं नैतिकता मानव जाति के लिए ही है जिसका एक ही लक्ष्य है मानवता की स्थापना। इस मानवता को बनाए रखना अति **आवश्यक** है जो

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

मानव को नैतिक बनाए रखने में मदद करती है । जैसा कि आध्यात्मिक गुरु श्रीमती कुसुम अस्थाना कहती है "धर्म है मानवता का और जाती है इंसान की।५

यद्यपि नई सहस्त्राब्धि में व्यावहारिक नैतिकता की चुनौतियां अपने स्थान पर उपस्थित हो रही है। स्वार्थ, लिप्सा,अहंकार, क्रोध, हिंसा वैमनस्य,द्वेष, प्रतिस्पर्धा एवं मानव का स्वयं द्वारा प्रकृति को चुनौती देना अपने आप में अतिशय विडंबनापूर्ण है, पर जैसे-जैसे हम मूल्याधारित शिक्षा अर्जित करते हैं किसी गुरु के माध्यम से ग्रंथ के माध्यम से, अनुभव के माध्यम से, शब्द के माध्यम से, लोक भाषा के माध्यम से वैसे-वैसे हमारे अंदर का अंधकार छटने लगता है और हमें नई रोशनी मिलती है। जिसकी मदद से इस निराशा भरे युग में भी हम अपनी आत्मा में उम्मीद कर दिया जलाएं रख सकते हैं । क्योंकि जिस प्रकार जगत की सैद्धांतिक समझ के लिए भौतिक अनुशासन होता है, उसी प्रकार सत्य के प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए नैतिक और आध्यात्मिक अनुशासन होता है।६ इसे हमें सदैव याद रखना ही होगा।

आधार ग्रंथ -

1. विवेकानंद साहित्य,नागपुर आश्रम
2. रामकृष्ण परमहंस, रोमिया रोला
3. सत्यार्थ प्रकाश, स्वामी दयानंद सरस्वती
4. धर्म दर्शन, करुणा शर्मा
5.भक्तवत्सल श्री कृष्ण, श्रीमती कुसुम अस्थानाजी
6. उपनिषदों की भूमिका, पृ. 2014 राजपाल एंड सन
7. मनुस्मृति
8. मैं राम बोल रहा हूं
9. सनातन धर्म

इच्छा संकल्प मूलक हैयज्ञ संकल्प से होते हैं , और सब व्रत एवं यज्ञ आदि संकल्प से ही होते पृष्ठ 36हैं।

इस संसार में इच्छा के बिना किसी मनुष्य का कोई काम कभी भी नहीं देखा जाता है।मनुष्य जो कुछ करता है वह सब इच्छा की चेष्टा है।

वेदोडविलो धर्ममूलम स्मृतिशीले च तद्वीदाम ।
आचार्यचैव साधूनात्मन स्तुष्टि रेवम्ब।।६
पृष्ठ -36

सब वेद वेदों को जानने वालों की स्मृति और ब्राह्मणत्व आदि तेरह प्रकार के शील देवपित्) - ,मृदुता ,शुचिता ,परोपकारिता ,सौम्यता ,भक्ति ,कृतज्ञता ,प्रियवादिता ,तामित्र (तोरूष प्रसन्नचित्तता ,शांति ,करुणा ,शरणागतवत्सलता महात्माओं का ,या रागद्वेष शून्यता (इत्यादि आचरण और अपने मन की प्रसन्नता ये सब धर्म के मूल है । पेज -37

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सनातन धर्म की वर्णना में जो तात्विक ज्ञान हम प्राप्त करते हैं वह कहीं ना कहीं वर्तमान के प्रत्येक धर्म में अपना स्थान रखता है । बौद्ध ,ईसाई ,जैन , Sanatan यहूदी इत्यादि। ,इस्लाम,सिख Dharma contains not only a Golden and silvery side, but it contains all the kinds of sides conceivable. It does not a lopsided view of things and it hold may due to provision of all kind of adhiktam Sanatan Dharma places before you separately the Karma kand. The bhakti Kand and the Granth Kand and in each kand there are different heading and subheadings. P-III